ये अव्यक्त इशारे

विजयी रत्न बनना है तो प्रीत बुद्धि बनो

19-08-2024

पवित्रता की सच्ची राखी बांधना अर्थात् संकल्प रूप से भी पांचों विकारों पर विजयी बनना। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है तो काम अर्थात् किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो सभी व्यर्थ संकल्प बाप के प्यार के पीछे न्योछावर कर दो तब विजयी माला का मणका बन सकेंगे।

Have a loving intellect in order to become a victorious jewel.

To tie the true rakhi of purity means to be victorious over the five vices, even in your thoughts. Waste thoughts give birth to anger and lust, that is any type of wasteful vision on any soul, would not be said to be purity. So, surrender all waste thoughts out of love for the Father and you will become a bead of the rosary of victory.